

पाश्चात्य सद्गुणाधारित नीतिशास्त्र का उद्भव और विकास Origin and Development of Western Virtue Ethics

Paper Submission: 10/11/2021, Date of Acceptance: 23/11/2021, Date of Publication: 24/11/2021

सारांश

अंजली शर्मा
शोध छात्रा,
दर्शनशास्त्र विभाग,
इलाहाबाद विश्वविद्यालय,
प्रयागराज,
उत्तर प्रदेश, भारत

सद्गुणाधारित नीतिशास्त्र, नीतिशास्त्र की वह शाखा है जो मानवीय सद्गुणों के स्वरूप, महत्व व विकास की विवेचना करता है तथा इस प्रश्न पर ध्यान केन्द्रित करता है कि 'सद्गुणी कर्म की जीवन में क्या महत्ता है'? नीतिशास्त्र के इस शाखा का मूल उद्देश्य मनुष्य के सद्गुणात्मक जीवन जीने के महत्व की विवेचना करना है। इस शोध-पत्र में पाश्चात्य सद्गुणाधारित नीतिशास्त्र का प्राचीन काल से लेकर वर्तमान समय तक के उद्भव और विकास को विवेचित किया गया है तथा सद्गुण के अर्थ की व्याख्या करते हुए विषय से संबंधित नीतिशास्त्रियों के मतों की विवेचना की गई है। साथ ही साथ शोध-पत्र में विचार किया गया है कि मूल्यनिष्ठ व्यावहारिक समस्याओं के निदान हेतु जहाँ एकवादी मानकीय सिद्धांत (उपयोगितावाद, कर्तव्यवाद आदि) उसके एकवादी होने के कारण असफल हो गये, वहीं सद्गुणाधारित नीतिशास्त्र मूल्यनिष्ठ व्यावहारिक समस्या के समाधान हेतु कहाँ तक कारगर सिद्ध होता है।

Virtue based ethics is that branch of ethics which discusses the nature, importance and development of human virtues and focuses on the question 'what is the importance of virtuous deeds in life'? The basic purpose of this branch of ethics is to discuss the importance of living a virtuous life. In this paper, the emergence and development of Western virtue ethics from ancient times to the present time has been discussed and while explaining the meaning of virtue, the views of ethics related to the subject have been discussed. In addition, the research paper has considered That where the normative normative theories (utilitarianism, causality etc.) have failed to solve the practical problems of value, due to their being monotheistic, to what extent the ethics based on virtue proves to be effective for solving the practical problem of value.

मुख्य शब्द: सद्गुण, चारित्रिक लक्षण, सद्गुणाधारित नीतिशास्त्र, उद्भव और विकास, सिद्धांतवाद-सिद्धांतविरोधिता।

Keywords: Virtue, Character trait, Virtue Ethics, Origin and development, Theory Anti-theory

प्रस्तावना

पिछले कई दशकों से सद्गुणाधारित नीतिशास्त्र एक नवीन शाखा के रूप में दार्शनिकों का रुचिकर विषय रहा है। नीतिशास्त्र इस प्रश्नों पर ध्यान केन्द्रित करता है कि 'उचित नैतिक जीवन क्या है?' 'हमारे कर्म सद्गुणी है या नहीं?', 'सद्गुणी कर्म की जीवन में क्या भूमिका है?' इत्यादि। इन्हीं विशेषताओं के कारण सद्गुणाधारित नीतिशास्त्र अपने विरोधी सिद्धांत (एकवादी मानकीय नैतिक सिद्धांत यथा, कर्तव्यवाद व उपयोगितावाद) से अलग हो जाता है। इस प्रकार सिद्धांतवादी बनाम सिद्धांतविरोधी विवाद की पटभूमि में मनुष्य के सद्गुणी होने के आह्वान की नवीनता ही इस शोध-पत्र का रोचक विषय है और सद्गुणाधारित नीतिशास्त्र के उद्भव व विकास की विवेचना करना मुख्य ध्येय है।

अध्ययन का उद्देश्य

प्रस्तुत शोध पत्र का मुख्य उद्देश्य पाश्चात्य सद्गुणाधारित नीतिशास्त्र के अन्तर्गत 'सद्गुण' के अर्थ को स्पष्ट करते हुए उसके उदय व विकास का विवेचन करना है।

सद्गुण का अर्थ

'सद्गुण' जिसे अंग्रेजी में 'Virtue' कहते हैं, 'Virtus' शब्द से आया है जिसका अर्थ 'उत्कृष्टता' (Excellence) है और इसकी मूल धारणा ग्रीक साहित्य के 'Arte' शब्द से आयी है जिसका अर्थ 'चारित्रिक सद्गुण' (character trait) है जिसे मनुष्य जन्म के उपरान्त अर्जित करता है। सद्गुण जीवमात्र की सद्प्रवृत्ति है, जिसके कारण वह विशिष्ट बनता है। अभिप्राय की शुद्धता से जब मनुष्य सदाचार करता है और निरंतर करता रहता है, तब उसमें सद्गुण उत्पन्न होते हैं। मनुष्य की नैतिक उत्तमता को ही सद्गुण कहते हैं। सद्गुण का अर्थ विवेचन व विश्लेषण कई दार्शनिकों ने विभिन्न प्रकार से किया है। इस सम्बन्ध में जोजेफ पीपर The Four Cardinal Virtue में सद्गुण को परिभाषित करते हुए लिखते हैं "The virtue are those excellences which enable a human being to attain the furthest potentialities of his nature." अर्थात् सद्गुण वह उत्कृष्टता है जो मनुष्य को अपनी वृत्ति के और अधिक संभावनाओं को प्राप्त करने में समर्थ बनाती है। इसी प्रकार थॉमस एक्विनास Summa Theologica में सद्गुण

को व्याख्यायित करते हुए कहते हैं “Virtue is good operative habit, that is good and productive of good”.² यानी, सद्गुण अच्छी क्रियात्मक आदत है जो शुभ को उत्पन्न करती है। इस प्रकार जोसेफ पीपर और थॉमस एक्विनास ने सद्गुण को मानवीय वृत्ति या लक्षण कहा जिससे उसके उत्कर्ष की परिपूर्ति हो सके।

जॉन मैकडोवेल सद्गुण को परिभाषित करते हुए कहते हैं “Virtue is a sensitivity to the requirement of a particular situation”.³ अर्थात् सद्गुण विशेष स्थिति के प्रति संवेदनशीलता है जो कर्म को एक विशेष तरीके से करने का आग्रह करता है। उल्लेखनीय है कि सद्गुण किसी विशिष्ट कर्म (particular activity) के सही निष्पादन की तकनीक नहीं है, बल्कि सिखा हुआ कौशल (learned skills) है जो हमें जटिल परिस्थितियों व नैतिक कठिनाइयों को रचनात्मक ढंग से सुलझाने की क्षमता प्रदान करता है। अतः सद्गुण ऐसा कौशल है जो सीखा जाता है, न कि तकनीक जो सिखाया जाता है। फिलिप्पा फ्रूट सद्गुण के संदर्भ में जॉन मैकडोवेल के मत को संशोधित करते हुए कहती हैं “Virtue are not mere capacities, but they belong to the will”.⁴ सद्गुण मात्र क्षमता नहीं, बल्कि इच्छाशक्ति से संबंधित है। यह वह इच्छाशक्ति है जो हमें शारीरिक सामर्थ्य, बौद्धिक क्षमता, बुद्धिमत्ता और कौशल में भेद करने में सहायता प्रदान करती है।

वहीं अलासाडेर मैकिंटायर ने सद्गुण की अवधारणा के तार्किक विकास में तीन अवस्थाओं की पहचान की है। प्रथम अवस्था ‘अभ्यास’ है, दूसरी अवस्था में मानव जीवन का एक कथाक्रम और तीसरी अवस्था नैतिक परम्परा के गठन करने वाले विवरण से संबंधित है। यहाँ ‘अभ्यास’ से तात्पर्य एकसुसंगत कर्म से है जिससे आंतरिक उत्कृष्टता की प्राप्ति होती है। मानव जीवन के जीवन-क्रम में आत्मा की पूर्णता श्रेष्ठ श्रेय है, जिसे जन्म से लेकर मृत्यु तक प्राप्त करने के लिए निरंतर नैतिक कर्म द्वारा अग्रसर रहना पड़ता है। इस प्रकार सद्गुण वह वृत्ति है जो हमारे आंतरिक स्वभाव को प्राप्त करने में हमें समर्थ बनाती है। तीसरी अवस्था में नैतिक परम्परा पर जोर दिया गया है जिसमें शुभत्व सामाजिक, नैतिक और राजनीतिक कारकों से प्रभावित होती है। इसी से नैतिक परम्परा का गठन होता है। स्पष्ट है कि सद्गुण एक अर्जित मानवीय श्रेष्ठ गुण है जो मनुष्य को आंतरिक शुभ प्राप्त करने के योग्य बनाता है।⁵

पाश्चात्य सद्गुणाधारित नीतिशास्त्र का उद्भव और विकास

पाश्चात्य सद्गुणाधारित नीतिशास्त्र का उद्भव प्राचीन ग्रीक दर्शन में हुआ जिसका उल्लेख विशेषकर सुकरात, प्लेटो, और अरस्तू के लेखों से प्राप्त होता है। प्राचीन दार्शनिकों का साध्य यह बताना था कि व्यक्ति के लिए सद्गुणी कर्म करना एवं सद्गुणात्मक जीवन जीना ही उत्तम क्यों है। सुकरात द्वारा पूछा गया प्रश्न ‘How should one live?’ ग्रीक दर्शन का मूल प्रश्न है और इस संदर्भ में उपरोक्त दार्शनिकों का एक ही उत्तर है कि सद्गुणी जीवन जीना ही सर्वोत्तम है।

ग्रीक सद्गुणाधारित नीतिशास्त्र

प्राचीन यूनानी सद्गुण के नीतिशास्त्र की आधारशिला मानवीय अनुभूति के वैयक्तिक परीक्षण में निहित है। सुकरात कहते हैं “The unexamined life is not worth living”⁶ अर्थात् जीवन के रहस्य को जाने बिना जीवन का कोई अर्थ नहीं। मानव जीवन एक अच्छे जीवन की इच्छा करता है और सद्गुण के नीतिशास्त्र की यूनानी जड़ें इस इच्छा में निहित हैं। अरस्तू अपनी पुस्तक *The Nicomachean Ethics* की शुरुआत इस प्रसिद्ध वाक्य से करते हैं “Everything we make and every inquiry, and likewise every action and decision seem to aim at some good; hence it has been said that all these aim at the good”.⁷ अर्थात् यद्यपि सभी इच्छाएँ हमारे लिए हितकर नहीं हैं, कुछ ऐसी इच्छाएँ हैं जो प्रत्यक्षतः अच्छे हैं। इसलिए यह जानना आवश्यक है कि कौन-सी इच्छाएँ वास्तव में अच्छी हैं। ग्रीक विचारकों ने इसे समझा और सद्गुण की नैतिकता के बारे में अपने-अपने विचारों का प्रतिपादन किया। सद्गुण की प्रकृति, परिभाषा, अर्थ आदि की व्याख्या उन्होंने इसी संदर्भ में किया।

‘सद्गुण’ नामक शब्द उत्कृष्टता का बोधक है। चारित्रिक उत्कर्ष का महत्व ग्रीक साहित्य में देखा जा सकता है। यूनानी साहित्य में सद्गुण पर विचार होमर से होता है। होमर यूरोप के सबसे महान व प्राचीनतम कवि स्वीकारे जाते हैं। वे अपने समय के सभ्यता तथा संस्कृति की अभिव्यक्ति का प्रबल माध्यम माने जाते हैं। होमर द्वारा रचित दो महाकाव्य *इलियाड* और *ओडिसिस* का प्रभाव यूनानी विचारों पर अद्वितीय रहा है। *इलियाड* में होमर ने द्रोय राज्य के साथ एथेन्स के युद्ध का वर्णन किया है। इस महाकाव्य में द्रोय की विजय और ध्वंस की कहानी तथा यूनानी वीर एकलिस की वीरता की गाथाएँ हैं। जबकि *ओडिसिस* में द्रोय के पतन के बाद ईथाकार के राजा ओडिसियस की, जिसे यूकलिज नाम से भी जाना जाता है, उस रोमांचक यात्रा का वर्णन है जिसमें वह अनेक कठिनाइयों का सामना करते हुए दस वर्ष बाद अपने घर पहुँचता है। होमरिक ग्रंथों से पाश्चात्य सद्गुण की नैतिकता का आरंभ देखने को मिलता है। प्राचीन काल में होमरिक महाकाव्यों में सद्गुण का वर्णन जिस प्रकार किया गया है ग्रीक संस्कृति में उसका महत्वपूर्ण योगदान रहा है। होमर की कविताओं में युद्ध में संयम रखना ताकि युद्ध जीतने के लिए सम्यक् सामरिक भावना का प्रदर्शन

किया जा सके और वीरता, साहस, श्रेष्ठ आचरण, उचित जीवन जीने जैसे महत्वपूर्ण सद्गुणों का अनुपम समन्वय देखने को मिलता है।

सुकरात-पूर्व ग्रीक दर्शन यूरोप के बौद्धिक चिंतन का एक महत्वपूर्ण अंग है। पाश्चात्य सभ्यता और संस्कृति के विकास में इसका महत्वपूर्ण योगदान रहा है। प्राचीन ग्रीक दृष्टिकोण जीवन और जगत के प्रति निष्पक्ष, तार्किक और यथार्थवादी था। ग्रीक युग दर्शन की प्रारंभिक अवस्था थी। ग्रीक विचारक पाइथागोरस, पार्मेनाइडीज, एनेक्जोगोरस आदि के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। इनकी अभिरुचि किसी घटना के प्राकृतिक कारणों की खोज करने में थी जिसके लिए वे किसी देवी अथवा आध्यात्मिक शक्ति की खोज करने का प्रयास नहीं करते थे। इसके विपरीत सोफिस्ट दार्शनिकों ने मानव-केन्द्रित पर बल दिया। इस युग में धार्मिक मान्यताओं के बहिष्कार के साथ-साथ परंपरागत रीति-रिवाज एवं प्रचलित सामाजिक नैतिकता के प्रति अनास्था हो गई। सोफिस्ट संप्रदाय के प्रवर्तकों में प्रोटागोरस का नाम अग्रण्य है। उनका सुप्रसिद्ध कथन है 'मनुष्य प्रत्येक वस्तु का मानदण्ड है' (Homo Mensura)। पार्मेनाइडीज, हेराक्लाइटस, डेमोक्रीटस आदि दार्शनिकों ने बुद्धि एवं इन्द्रिय में भेद करते हुए तत्त्व ज्ञान का आधार बुद्धि को माना है, किंतु प्रोटागोरस बुद्धि और इन्द्रियजन्य ज्ञान के इस भेद का निराकरण करते हैं। उनके अनुसार, 'सत्य' व्यक्ति की संवेदना और अनुभूति तक ही सीमित है। स्पष्ट है कि सोफिस्ट सत्य को आत्मनिष्ठ बना देते हैं।⁸ यदि इसे स्वीकार कर लिया जाए कि मनुष्य ही प्रत्येक वस्तु का मानदण्ड है तो सार्वभौमिक नैतिकता ही समाप्त हो जाती है। सोफिस्ट के अनुसार, 'सद्गुण व्यक्ति का इच्छित सुख है'। इस सिद्धांत को मानने से 'सद्गुण' की वस्तुनिष्ठता समाप्त हो जाती है। इससे शुभ और अशुभ, उचित और अनुचित का भेद मिट जाता है। जो वस्तु एक व्यक्ति के लिए सुखद है, वही वस्तु दूसरे व्यक्ति के लिए दुःखद हो सकता है। वास्तव में सुख इच्छा तृप्ति का परिणाम है। हमारे इच्छाओं, संवेगों, भावनाओं को किसी सार्वभौम और वस्तुनिष्ठ नैतिक सिद्धांत का आधार नहीं माना जा सकता। आगे चलकर प्लेटो ने सोफिस्टों के इस सिद्धांत का खंडन किया। उनके अनुसार जिस प्रकार सत्य मतको ज्ञान नहीं कहा जा सकता है उसी प्रकार सुख को सद्गुण नहीं कहा जा सकता है। किसी कार्य को उचित या सद्गुणपरक होने के लिए केवल यह जानना पर्याप्त नहीं कि 'क्या उचित है', बल्कि यह जानना भी आवश्यक है कि 'वह क्यों उचित है' अर्थात् जो उचित है, वह सद्गुणयुक्त है या नहीं।⁹

सुकरात(470-399 ई0 पू0) ने सोफिस्टों के मत का खंडन करके ज्ञान के वस्तुनिष्ठ पक्ष को स्थापित किया है। उनके अनुसार ज्ञान सदैव वस्तुनिष्ठ है और सद्गुण है। सुकरात का प्रसिद्ध कथन है "ज्ञान ही सद्गुण है"। सद्गुणी व नैतिक जीवन ही परम शुभ है। सुकरात सद्गुण और ज्ञान को परस्पर अवियोज्य व अभिन्न मानते हैं। वे अज्ञान को सबसे बड़ा दुर्गुण कहते हैं। जिस व्यक्ति को उचित व अनुचित का ज्ञान न हो वह नैतिक कर्म नहीं कर सकता। उचित व नैतिक आचरण करने के लिए सद्गुणों का ज्ञान होना आवश्यक है। जब तक मनुष्य को सद्गुणों यथा संयम, साहस, विवेक, न्याय, ईमानदारी आदि का ज्ञान न हो तब तक वह नैतिक आचरण नहीं कर सकता। सुकरात सभी सद्गुण को सामंजस्यपूर्ण व 'विवेक' नामक सद्गुण का ही विभिन्न रूप मानते हैं अर्थात् किसी व्यक्ति के ज्ञान और आचरण में सामंजस्य होना उसके विवेकपूर्ण सद्गुणी मनुष्य होने की पहचान है।

इसी युग के एक और महान दार्शनिक प्लेटो (428-527 ई0 पू0) ने सद्गुण की विवेचना की। उन्होंने अपनी पुस्तक *Republic* में चार मुख्य सद्गुण संयम, साहस, मिताचार और न्याय की चर्चा करते हैं और बताते हैं कि बौद्धिक व्यक्ति आनंद, सम्मान और शक्ति की ओर उन्मुख रहता है, परन्तु जब उसको सत्यता का भान होता है तब ज्ञात होता है कि नैतिक जीवन जीने के लिए मात्र बौद्धिक होना ही नहीं बल्कि न्यायप्रिय होना भी महत्वपूर्ण है। इस संदर्भ में प्लेटो कहते हैं "Moral virtue is a habit or trained power of choice whose characteristics lies in observing the mean relative to the person concerned and which is according to the judgement of the prudent man."¹⁰ नैतिक सद्गुण आदत या चयन की प्रशिक्षित वृत्ति है जो विवेकपूर्ण व्यक्ति के निर्णय के अनुसार व्यक्ति सापेक्ष 'माध्य चयन' पर आधारित है। प्लेटो मानव-स्वभाव में निहित भावनाएँ, इच्छाएँ, वासनाएँ आदि अबौद्धिक तत्वों की उपेक्षा करते हुए मानव की बुद्धि को महत्व देते हैं तथा उचित नैतिक जीवन के लिए अबौद्धिक तत्वों का दमन करना आवश्यक मानते हैं।

इसी परंपरा को आगे बढ़ाते हुए अरस्तू (384-322 ई0 पू0) अपनी पुस्तक *The Nicomachean Ethics* में सद्गुण को परिभाषित करते हुए लिखते हैं "That state of a thing which constitutes its peculiar excellence and enables it to perform its function well; particularly in man the activity of reason and of rationally ordered habits".¹¹ सद्गुणात्मक कर्म वे कर्म हैं जो स्वयं साध्य हैं। वे कर्म अपने में उत्कृष्ट व सुन्दर हैं, हम उन्हीं कर्मों को सर्वोत्कृष्ट की संज्ञा देते हैं जिनकी जाँच शुभ प्राणी ही कर सकता है। अरस्तू के अनुसार सद्गुण व्यक्ति का आंतरिक सद्गुण है जिससे वह कर्मों के शुभत्व व औचित्य का निर्धारण करता है। सद्गुण मनुष्य की स्थायी मानसिक अवस्था है जो निरंतर अभ्यास से

उत्पन्न होती है तथा जिसकी अभिव्यक्तिऐसे अच्छे कर्मों में होती है जिसे बुद्धि निर्धारित करती है। अर्थात् सद्गुण सम्यक् बौद्धिक कर्म करने की आदत है। यही मनुष्य को परम शुभरूपी मानव-कल्याण की ओर अग्रसर करता है।

मध्यकालीन सद्गुणाधारित नीतिशास्त्र

मध्यकालीन पश्चिमी यूरोप की नैतिकता में आदर्श और सिद्धांतों की केंद्रीय भूमिका रही है। प्रारंभिक मध्य युग की कृतियाँ सद्गुणों पर आधारित थीं। उस समय *पवित्र आत्मा* के विचार को सद्गुण माना जाता था। परंतु 11वीं और 12वीं शताब्दी में अन्य सद्गुणों की चर्चा भी होने लगी। इतना ही नहीं, सामाजिक व संस्थानिक परिवर्तनों के कारण आदर्श सद्गुण की अवधारणा पर पुनः सोचने की आवश्यकता हुई। इसी समय Monastic और Proto-Scholastic दार्शनिकों ने पाप, दोष, अभियोज्यता जैसे मानवीय कर्मों का मनोवैज्ञानिक पुनः परीक्षण के उपरांत नैतिक सिद्धांत का प्रतिपादन किया।¹² 12वीं शताब्दी के चिंतकों द्वारा परंपरागत सद्गुण का मानवीय कल्याण के संदर्भ में पीटर अबेलाई(1074-1142) और पीटर लाम्बार्ड(1100-1160) ने व्यवस्थित विश्लेषण किया। उन्होंने सद्गुण के संदर्भ में दो परस्पर विरोधात्मक दृष्टिकोण प्रतिपादित किया। पीटर अबेलाई, अरस्तू के सद्गुण संबंधित विचार का विश्लेषण करते हुए कहते हैं कि *परम सुख* को वह व्यक्ति प्राप्त कर सकता है जो नैतिक कर्म करने के मार्ग का अनुसरण करने के योग्य है। वहीं पीटर लम्बार्ड धर्मशास्त्रीय विश्लेषण के आधार पर सद्गुण का विचार प्रतिपादित करते हैं। उनके अनुसार सद्गुण और ईश्वरीय कृपा एक-दूसरे से घनिष्ठ रूप से जुड़े हुए हैं। ईश्वर हमारी आत्मा में सद्गुण को डालता है और हम ईश्वरीय कृपा के कारण उसे अपने कर्म में प्रकट करते हैं। अर्थात् सद्गुण के बिना ईश्वरीय कृपा के संभव नहीं है। कुछ इसी प्रकार का विचार विलियम औक्स्त्रे, सिसैरो और बोनावेंचर का भी है।¹³ मध्यकाल में अरस्तू के सद्गुण संबंधी विचार को विकसित करने का श्रेय थॉमस एक्विनास (1225-1274) को जाता है। एक्विनास अपनी पुस्तक *Summa Theologica* में कहते हैं कि सद्गुण बुद्धि का श्रेष्ठ गुण है जिसे ईश्वर ने हमारे अंदर डाला है जिसके बिना हम एक नैतिक जीवन नहीं जी सकते।¹⁴

आधुनिक सद्गुणाधारित नीतिशास्त्र

आधुनिक युग में मुख्यतः कांट (1724-1804) का 'कर्तव्यवाद' और जॉन स्टुअर्ट मिल (1806-1873) के 'उपयोगितावाद' के सिद्धांत का दौर शुरू होता है। कांट अपनी पुस्तक *Foundations of the Metaphysics of Morals* में बताते हैं कि 'कर्तव्य' के लिए मनुष्य में एक प्रकार की बाध्यता होती है जिससे प्रेरित होकर वह कर्म करता है। शुभ संकल्प में निहित यह कर्तव्य चेतना ही वह नैतिक नियम है जिसके प्रति श्रद्धा व सम्मान की भावना से उसके अनुरूप कर्म करने की अनिवार्यता होती है। कांट की दृष्टि में परिणाम और इच्छाओं से प्रेरित कार्य नैतिक नहीं कहे जा सकते क्योंकि इच्छा व परिणाम परिस्थितिजन्य और परिवर्तनशील होते हैं। अतः 'कर्तव्य के लिए कर्तव्य' की दृष्टि से किया गया कर्म ही नैतिक कर्म है। इसमें न इच्छा का प्रभाव रहता है और न ही वस्तु का।¹⁵ वहीं दूसरी ओर मिल अपनी पुस्तक *Utilitarianism* में बताते हैं कि उपयोगितावाद वह मत है जो नैतिकता को उपयोगिता या 'अधिकतम के सुख' के वृद्धि के सिद्धांत पर आधारित करता है और मानता है कि कर्म उसी अनुपात में उचित या अनुचित है जिस अनुपात में वह सुख की वृद्धि या सुख के विरोधी दुःख को कम करता है।¹⁶

इन्हीं एकवादी व निरपेक्षवादी मानकीय नैतिक सिद्धांत जिनमें मानवीय सद्गुणों का तनिक महत्व नहीं होता, नीतिशास्त्र में सद्गुणों की चर्चा को मृतप्राय कर दिया था। मूल्यपरक व्यावहारिक समस्या के निदान में मानकीय नैतिक सिद्धांतों को लागू करके समस्या का समाधान निकालने का प्रयास मुख्य हो गया। इससे समस्या सुलझने की बजाय और अधिक उलझ गई। इसका मुख्य कारण आधुनिक नैतिक सिद्धांतों की हठवादिता है जिसमें सद्गुणों का स्थान नहीं रहता। इस संदर्भ में एलन डोनागन कहते हैं "The theory of morality as a theory of a system of laws or precepts, binding upon all rational creatures as such, the content of which is ascertainable of human reason".¹⁷ नैतिकता के सिद्धांत, नियमों की निरपेक्ष व्यवस्था है जो सभी बुद्धिप्रधान प्राणियों के लिए बाध्यताकारी होता है क्योंकि ये सिद्धांत मानव बुद्धि द्वारा निश्चित की जाती है। इस प्रकार मानकीय नैतिक सिद्धांतकार कर्ता के समक्ष नैतिक द्वन्द की स्थिति में एक आदर्श व निरपेक्ष मानक प्रस्तुत करते हैं और इन्हीं निरपेक्ष मानकों के आधार पर कर्ता के नैतिक समस्या का निराकरण करने का प्रयास करते हैं।

समकालीन सद्गुणाधारित नीतिशास्त्र

आधुनिक युग की एकवादी, निरपेक्षवादी व हठवादी सिद्धांतों की विफलता के परिप्रेक्ष में सद्गुणाधारित नीतिशास्त्र की चर्चा प्रारंभ हुई और 20वीं सदी में पुनः लोकप्रिय हो गयी। समकालीन दर्शन में सद्गुणाधारित नीतिशास्त्र को पुनर्जीवित करने का श्रेय एलिजाबेथ एसकांम्बे (1919-2001) हो जाता है। एसकांम्बे अपने लेख "Modern Moral Philosophy"¹⁸ में आधुनिक नीतिशास्त्र की आलोचना करते हुए सद्गुणाधारित नीतिशास्त्र की ओर लौटने का आह्वान करती हैं। वे कहती हैं कि मनोविज्ञान के दर्शन (Philosophy of Psychology) को नैतिक दर्शन का स्थान लेना चाहिए तभी सद्गुण की नैतिकता नैतिक दर्शन में लौट पायेगी।

नैतिकता में सिद्धांत बनाम सिद्धांतविरोधिता के विवाद का उद्देश्य आधुनिक युग की दो विरोधी विचारधाराओं की त्रुटियों को उजागर करना है, जो मुख्यतः कर्तव्यवादी और उपयोगितावादी नैतिक सिद्धांतों की विचारधाराएँ हैं। ये दावा करते हैं कि नैतिक ज्ञान प्राप्त करने के लिए और नैतिक कर्मों के सफल मार्गदर्शन के लिए हमें नैतिकता के प्रथम या मूलभूत सिद्धांतों पर निर्भर रहना चाहिए। कर्तव्यवाद मानवीय कर्मों के परिणामों पर बल न देकर कर्तव्य की प्रेरणा के औचित्य व अनौचित्य परबल देता है। कर्तव्यवादी सिद्धांत का पहला मानक काण्ट के श्रेणीगत अनिवार्यता का सिद्धांत है। काण्ट का कहना है कि नैतिक नियम सार्वभौमिकता एवं परस्पर व्यवहार के दो सिद्धांतों पर आधारित है। यहाँ 'सार्वभौमिकता' से काण्ट का अभिप्राय यह है कि कोई कर्म ऐसा हो जिसे सभी लोगों पर लागू किया जा सके और 'पारस्परिकता' का अर्थ है जैसा अपने प्रति चाहते हो वैसा ही कर्म करो। दूसरी, विख्यात कर्मपरक नैतिकता का सिद्धांत है- नैतिक निरंकुशता। जिसके अनुसार कुछ ऐसी कसौटियाँ हैं जिन्हें आधार मानकर नैतिक द्वन्द्वों पर निर्णय लिया जा सकता है। इन कसौटियों पर विचार करने से कुछ कर्म उचित तो कुछ कर्म अनुचित सिद्ध होते हैं। किंतु यह सिद्धांत इस तथ्य की उपेक्षा करता है कि कभी-कभी अनुचित कर्म उचित फल पाने के लिए भी किया जाता है। वहीं परिणामवादी नीतिशास्त्रियों के अनुसार किसी कर्म की नैतिकता उसके परिणाम के आकलन से जुड़ी हुई होती है। अतः नैतिक रूप से उचित कर्म अच्छा परिणाम जबकि नैतिक रूप से अनुचित कर्म बुरा परिणाम देने वाले कर्म हैं। परिणाम के शुभत्व के आधार पर कर्म केशुभत्व की बात उपयोगितावादी दार्शनिक करते हैं।

उल्लेखनीय है कि सद्गुणाधारित नीतिशास्त्र इन सिद्धांतों को अस्वीकार करता है। सिद्धांतवादिता और सिद्धांतविरोधिता का विवाद (theory-anti-theory debate) परंपरागत मानकीय सिद्धांतों की अस्वीकृति से सामने आता है। नैतिक मानकों या मानदण्डों की स्थापना एवं उसके आधार पर समस्त मानवीय आचरणों का नैतिक मूल्यायन करना नीतिशास्त्र के आवश्यक व महत्वपूर्ण कार्य नहीं है क्योंकि जब हम जीवन के व्यावहारिक स्थितियों में नैतिक द्वन्द्व का सामना करते हैं, तो प्रयोजनवादी, कर्तव्यवादी एवं अन्य महत्वपूर्ण नैतिक मानक उन नैतिक दुविधाओं को सुलझाने के स्थान पर अधिक उलझा देती है। उदाहरण के तौर पर, यदि मैं जीवन में किसी मूल्यपरक व्यावहारिक समस्या का सामना कर रही हूँ और समाधान के लिए उपयोगितावादी और कर्तव्यवादी सिद्धांतकार के पास जाऊँ तो उपयोगितावादी चिंतक मुझे अधिकतम के सम्भाव्य शुभ की वृद्धि के मार्ग का अनुसरण करने की प्रेरणा देंगे और कर्तव्यवादी सुझाव देंगे कि मैं कर्तव्य के लिए कर्तव्य की दृष्टि से कर्मकरूँ जो आंतरिक रूप से मूल्यवान है, अच्छे परिणामों के लिए नहीं। परिणामतः नैतिक सिद्धांत आपस में टकरा जाते हैं और इनमें सामान्य बात यह रहती है कि समाधान की विधि सिद्धांतानुगत है, अर्थात् किसी एक मानकीय नैतिक सिद्धांत को निरपेक्षतः सत्य मानकर किसी मूल्यपरक समस्या के संदर्भ में प्रयुक्त किया गया है।

सद्गुणाधारित नीतिशास्त्री जैसे, अलासडेर मैकिंटायर, बर्नार्ड विलियम्स, एनेट बायर आदि मानकीय नैतिक सिद्धांत की आलोचना करते हुए कहते हैं कि सद्गुणाधारित नीतिशास्त्र नैतिक सिद्धांतों से भिन्न है जो अपने सिद्धांत को अपवाद रहित व सार्वभौम रूप से उपयुक्त मानता है। मैकिंटायर अपनी पुस्तक *After Virtue* में कहते हैं कि आधुनिक मानकीय सिद्धांत निरर्थक है क्योंकि ये सिद्धांतों के निरपेक्ष अनुसरण की बात करके नैतिकता के क्षेत्र को संकीर्ण कर देता है। मैकिंटायर, अरस्तू का समर्थन करते हुए कहते हैं कि सद्गुण आंतरिक वृत्ति है जो निरंतर नैतिक अभ्यास से उत्पन्न होता है और जिसमें व्यावहारिक बुद्धिमत्ता मौजूद रहती है। सद्गुण कोई नियम नहीं जिसे सिखाकर सद्गुणी मनुष्य बनाया जा सकता है बल्कि यह व्यक्ति के स्वसंकल्प एवं प्रयास से चरित्र में समावेशित होता है।¹⁹

इसी सन्दर्भ में माइकल स्टॉकर अपने लेख "The Schizophrenia of Modern Ethical Theories" में एकवादी निरपेक्ष नैतिक सिद्धांत की समस्या को विखंडित अवधारणा मानते हैं जिसमें नैतिक सिद्धांतों की निरपेक्ष प्रकृति कर्ता को किसी परिस्थिति विशेष में सिद्धांतों से परे व्यावहारिक करने की अनुमति नहीं देता है।²¹ नैतिक स्किजोफ्रेनिया का अर्थ वह मानसिक व्याधि है कि अधिकांश नैतिक स्थितियों में व्यक्ति नैतिक सिद्धांतों से प्राप्त आचरणों के नियमों का पालन करके सभी नैतिक समस्याओं का समाधान कर लेगा। आधुनिक नैतिक सिद्धांत प्रेम, मित्रता, सामुदायिकता जैसे गुणों को महत्व नहीं देता है जो आनंद प्राप्ति के मूल्यवान स्रोत हैं। वहीं सद्गुणाधारित नीतिशास्त्र नैतिक स्किजोफ्रेनिया से विलग है क्योंकि इसमें सद्गुणों के विकास और आंतरिक अच्छाई की बहुलता है जिसमें प्रेम, मित्रता, सामुदायिकता जैसे गुणों को सद्गुणी बनने एवं नैतिक कर्ता का चहुँमुखी कल्याण होने की महत्ता है।

सद्गुण की नैतिकता कर्ता उन्मुख दृष्टिकोण है न कि नैतिकता के द्वन्द्वों का कृत्रिम समाधान दृष्टिकोण। इसका बुनियादी आधार व्यक्ति को कैसा होना चाहिए? इससे संबंधित है, समस्या समाधान के लिए नियमों को प्रस्तुत करना और निरपेक्षतः प्रयुक्त करना नहीं है। वास्तविक जीवन में व्यक्ति सामान्यतः यह निर्णय नहीं लेता है कि सिद्धांतों को लागू करके क्या करना है क्योंकि चरित्र और अनुभव उन्हें यह निर्णय देता है कि स्थिति क्या कहती है। सद्चरित्र और अनुभव के अभाव में व्यक्ति नैतिक समस्या के लिए उचित नियम के प्रयोग से हठात् एक अच्छा व्यक्ति नहीं बन सकता। उचित कर्म, सद्गुण की नैतिकता के परिप्रेक्ष्य में अच्छे चरित्र से संबद्ध है। किंतु मानकीय सिद्धांत समस्या को सुलझाने की आतुरता में चरित्र की उपेक्षा करता है।

उदाहरण के रूप में समझ सकते हैं कि यदि हम इस नैतिक प्रश्न का उत्तर पाना चाहें कि 'मुझे झूठ क्यों नहीं बोलना चाहिए' तो इसका कारण यह नहीं है कि यह किसी नैतिक नियम के विरुद्ध है, और न ही यह कि अधिकतम के लिए उपयोगी है, बल्कि इस कारण कि अकारण झूठ बोलना व्यक्ति के चरित्र के

विकास, उसका सार्विक कल्याण और सामुदायिक चरित्र के विकास में बाधक है। इसलिए सद्गुण, किसी कर्म के सही निष्पादन की तकनीक नहीं है, बल्कि सिखा हुआ कौशल है जो हमें जटिल परिस्थितियों व नैतिक कठिनाइयों को रचनात्मक ढंग से सुलझाने की क्षमता प्रदान करता है।

उपरोक्त वर्णन से स्पष्ट है कि सद्गुणाधारित नीतिशास्त्र प्राचीन युग में नैतिक सिद्धांतों का प्रमुख रूप था परंतु आधुनिक युग में इस दृष्टिकोण की अवज्ञा की गई। समकालीन युग में जी० ई० एम० एंसकोम्बे के लेख "Modern Moral Philosophy" से सद्गुणाधारित नीतिशास्त्र (जो दार्शनिक नैतिकता की प्रमुख विधियों में से एक है) के प्रति पुनः रुचि जागृत हुई। आधुनिक युग के नैतिक सिद्धांतों के प्रति असंतोष के परिणामस्वरूप यह नवीन विधा सामने आयी। सद्गुण की नैतिकता का पुनरुत्थान मुख्यतः अरस्तवी नैतिकता से प्रेरित रहा है। जिसमें मनुष्य के उचित कर्म व श्रेय की बात होती है जो किसी सामान्य नियम व सिद्धांत के अधिकृत नहीं होता बल्कि संवेदनशीलता और विवेक से संबंधित होता है। इसमें नैतिक विचार, इच्छा और कर्म की अच्छी आदतें सम्मिलित होती हैं। एंसकोम्बे भी अरस्तू की भाँति मानव उत्कर्ष की अवधारणा पर बल देती हैं। उनके अनुसार मानकीय सिद्धांत के प्रभाव के कारण कर्तव्य, दायित्व, इच्छा जैसी नैतिकता की मूल अवधारणाएं वर्तमान समय में विफल हो गई हैं। इसलिए सद्गुणी होना महत्वपूर्ण है जो नैतिक जीवन जीने के लिए आंतरिक रूप से मूल्यवान है।

निष्कर्ष

निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि ग्रीक दर्शन में मूल्यों की तारतम्यता की चर्चा सामान नहीं रही। अरस्तू के लिए यूडेमोनिया श्रेष्ठ गुण था। वहीं मध्य युग में ग्रीक प्रभाव बना रहा किंतु सद्गुणों के श्रेणीकरण में पंथवाद का दबदबा रहा। क्रिश्चियन पंथवाद के प्रभाव के कारण आस्था, आशा और प्रेम को उच्चकोटि में रखा गया। किंतु आधुनिक काल के आते ही सद्गुण का श्रेष्ठत्व विचार भिन्न हो गया उन्होंने या तो प्रयोजनीयता की दृष्टि से और नहीं तो कर्तव्य की दृष्टि से सद्गुणों का श्रेणीकरण किया जो सद्गुणों का सीमित दृष्टिकोण था। परंतु समकालीन युग में सद्गुणाधारित नीतिशास्त्र की उपयोगिता व महत्व के कारण पुनः उसकी चर्चा प्रारंभ हुई। मूल्यनिष्ठ व्यावहारिक समस्याओं के निदान हेतु जब एकवादी मानकीय सिद्धांत (कर्तव्यवाद व उपयोगितावाद) व्यक्ति को दोराहे पर लाकर खड़ा कर दिया कि वह किस सिद्धांत का अनुसरण करके समस्या का समाधान करें तब व्यक्ति को इस नैतिक द्वन्द से बाहर निकालने का काम सद्गुणाधारित नीतिशास्त्र करता है क्योंकि जहाँ मानकीय सिद्धांत समस्या समाधान के लिए निरपेक्ष सिद्धांतों का प्रयोग करता है वहीं सद्गुणाधारित नीतिशास्त्र उस व्यक्ति के चरित्र के विकास पर केंद्रित है जिसे नैतिक दुविधा का सामना करना है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. Pieper, J. (1966). *The Four Cardinal Virtue*. Notre Dame : Notre Dame University Press, p.8.
2. Aquinas, T. (1966). *Summa Theologica. Principles of Morality*. London : Black Friars. 156.
3. McDowell, J. (1979). "Virtue and Reason". *The Monist*, 62, pp. 331-350.
4. Foot, P. (1978). *Virtue and Vices*. Berkeley : California University Press, p.64.
5. McIntyre, A. (1978). *After Virtue*. Notre Dame : Notre Dame University Press, p.172.
6. Plato's. (1956). *Apology*. A.E. Taylor (Trans.). Cleveland : The World Publishing Company, p.148.
7. McIntyre, A. (1966). *A Short History of Ethics*. London : Routledge & Regan Paul, p.21.
8. *Ibid*, p. 22.
9. *Ibid*, p. 25
10. Irwin, T. (1995). *Plato's Ethics*. New York : Oxford University Press, pp. 75-83.
11. Aristotle. (1999). *The Nicomachean Ethics*. Terence Irwin (Trans.). Indiana Polis : Hackett Publishing Company. Book I, 1102b-1103a, p. 16.
12. <https://Plato.stannford.edu/entries/medieval-philosophy/>
13. www.iep.edu/abelard/
14. McGinn, B. (2014). *Thomas Aquinas's Summa Theologica*. N.J. : Princeton University Press, pp.56-87.
15. Kant, I. (1995). *Foundation of the Metaphysics of Moral*. L.W. Beck(Trans.). N.J. : Prentice Hall, p. 34.
16. David, L. (1965). *Forms and Limits of Utilitarianism*. Oxford : Oxford University Press, p. 20.
17. Alan, D. (1977). *The Theory of Morality*. Chicago : University of Chicago Press, p.8.
18. Anscombe, G.E.M. (1958). "Modern Moral Philosophy". *Philosophy*, 33, pp.1-19.
19. McIntyre, A. (1978). *After Virtue*. op.cit, p.66.